

“अपने स्थान पर डटे रहो” लेकिन केवल कुछ के लिए: आत्मरक्षा और फिलिस्तीनी संघर्ष पर अमेरिका का दोहरा मापदंड

यदि कोई आपके घर में जबरदस्ती घुस आए, तो क्या आपको आत्मरक्षा का अधिकार है?

संयुक्त राज्य अमेरिका में जवाब स्पष्ट है: **हाँ**। दर्जनों राज्यों में “Stand Your Ground” कानून व्यक्तियों को अपनी संपत्ति और जीवन की रक्षा के लिए घातक बल का उपयोग करने की अनुमति देते हैं - यहाँ तक कि सार्वजनिक स्थानों पर और तब भी जब पीछे हटने का विकल्प हो। हालांकि, जब फिलिस्तीनी, जिनकी जमीन सात दशकों से अधिक समय से कब्जे में है और जिनके घर ढहाए जा रहे हैं, इस निरंतर हिंसा का विरोध करने की कोशिश करते हैं, तो न केवल उन्हें वही नैतिक विचार से वंचित किया जाता है - बल्कि उन्हें **आतंकवादी** करार दिया जाता है। यह विरोधाभास आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सबसे स्पष्ट पाखंडों के केंद्र में है।

ऐतिहासिक संदर्भ: संघर्ष की औपनिवेशिक जड़ें

अन्याय 1967, 2000 या 2023 में शुरू नहीं हुआ। 19वीं सदी के अंत में, यूरोपीय राष्ट्रवाद और यहूदी-विरोधी भावना के उदय के बीच, **सियोनिस्ट आंदोलन** एक यहूदी मातृभूमि बनाने के लक्ष्य के साथ उभरा। 1897 में, **प्रथम सियोनिस्ट कांग्रेस** ने औपचारिक रूप से घोषणा की कि वह इस मातृभूमि को **फिलिस्तीन** में स्थापित करने का इरादा रखता है, जो उस समय उस्मानी साम्राज्य का हिस्सा था। उस समय, फिलिस्तीन में मुख्य रूप से अरब आबादी थी, और हिब्रू भाषा मुख्य रूप से **धार्मिक भाषा** के रूप में उपयोग की जाती थी, न कि बोली जाने वाली भाषा। यहूदी उपस्थिति न्यूनतम थी, जो छोटे कृषि बस्तियों और बिखरे हुए समुदायों तक सीमित थी।

यूरोप में फासीवाद के उदय के साथ सब कुछ बदल गया। 1930 और 1940 के दशक में, जब यहूदी नाज़ी उत्पीड़न से भाग रहे थे, तब हजारों लोग **ब्रिटिश मँडेट फिलिस्तीन** में प्रवास कर गए, जिससे जनसांख्यिकीय संरचना में नाटकीय बदलाव आया। तनाव चरम पर पहुँच गया। **इर्गुन** और **लेही** (स्टर्न गैंग) जैसे यहूदी अर्धसैनिक समूहों ने ऐसी कार्रवाइयाँ कीं, जिन्हें आज **आतंकवाद** के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा: अरब बाजारों में बमबारी, ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या, और 1946 में **किंग डेविड होटल** पर बमबारी जैसे हमले, जिसमें 91 लोग मारे गए। उन्होंने काहिरा में ब्रिटिश राज्यमंत्री **लॉर्ड मोयने** की भी हत्या की और **रोम में ब्रिटिश दूतावास** को बम से उड़ा दिया।

इन हिंसक अभियानों ने ब्रिटिश शासन को असहनीय बना दिया। 1947 में, ब्रिटेन ने मँडेट को **नवगठित संयुक्त राष्ट्र** को सौंप दिया, जिसने एक विभाजन योजना प्रस्तावित की। केवल **30% आबादी** होने और **केवल 7% जमीन** के मालिक होने के बावजूद, यहूदी आबादी को **फिलिस्तीन का 56%** हिस्सा दिया गया। इससे असंतुष्ट सियोनिस्ट मिलिशिया ने जितना संभव हो उतने फिलिस्तीनियों को निष्कासित करने के लिए एक हिंसक अभियान शुरू किया। परिणाम **नकबा** - या “आपदा” - था, जिसके दौरान **7,50,000 से अधिक फिलिस्तीनी निष्कासित किए गए** और **500 से अधिक गाँव नष्ट किए गए** ताकि नया इज़राइल राज्य बनाया जा सके।

अंतरराष्ट्रीय कानून और कब्जे के खिलाफ प्रतिरोध का अधिकार

अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत, इज़राइल की **वेस्ट बैंक**, **पूर्वी यरूशलेम** और पहले **गाजा** में मौजूदगी को **सैन्य कब्जा** माना जाता है - एक कानूनी स्थिति जिसमें विशिष्ट दायित्व हैं। **चौथा जेनेवा सम्मेलन** और **हेग नियम** स्पष्ट रूप से निम्नलिखित को प्रतिबंधित करते हैं:

- कब्जे वाली भूमि का **स्थायी अधिग्रहण**,

- कब्जे वाली शक्ति की आबादी का **कब्जे वाले क्षेत्र में स्थानांतरण** (अर्थात् बस्तियाँ),
- और कब्जे करने वाली शक्ति के लाभ के लिए **प्राकृतिक संसाधनों का शोषण**।

अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) ने 2004 में इसकी पुष्टि की, जिसमें कहा गया कि इज़राइल की दीवार और बस्तियाँ अवैध हैं, और इज़राइल अंतरराष्ट्रीय दायित्वों का उल्लंघन कर रहा है। **कब्जे वाली शक्ति** को **नागरिक आबादी** की रक्षा करने की जिम्मेदारी है, न कि उसे सैन्य कानून, घरों की तोड़फोड़, कर्फ्यू, और रंगभेद शैली की आवाजाही प्रतिबंधों के अधीन करने की।

इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय कानून **औपनिवेशिक प्रभुत्व और विदेशी कब्जे के तहत लोगों के प्रतिरोध के अधिकार** को मान्यता देता है, जिसमें सशस्त्र संघर्ष भी शामिल है। **संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव 3246 (1974) और 37/43 (1982)** इसकी पुष्टि करते हैं:

“स्वतंत्रता, क्षेत्रीय अखंडता, और औपनिवेशिक और विदेशी प्रभुत्व से मुक्ति के लिए लोगों की सभी उपलब्ध साधनों, जिसमें सशस्त्र संघर्ष शामिल है, के माध्यम से संघर्ष की वैधता।”

यह हिंसा के लिए खुली छूट नहीं है - प्रतिरोध को अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का पालन करना चाहिए - लेकिन यह पुष्टि करता है कि **कब्जे के खिलाफ प्रतिरोध का अधिकार वैध है**। फिर भी, इस अधिकार का उपयोग करने वाले फिलिस्तीनियों को लगभग हमेशा **आतंकवादी** करार दिया जाता है, जबकि कब्जे वाली शक्ति को सैन्य सहायता और कूटनीतिक संरक्षण प्राप्त होता है।

चल रही नकबा: अन्य साधनों द्वारा जातीय सफाई

हालांकि नकबा को अक्सर 1948 की एकमुश्त घटना के रूप में याद किया जाता है, लेकिन वास्तव में यह एक **निरंतर प्रक्रिया** है। आज, **70 लाख से अधिक फिलिस्तीनी** अभी भी **शरणार्थी या आंतरिक रूप से विस्थापित** हैं, जिन्हें **संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव 194** में पुष्टि किए गए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त **वापसी के अधिकार** से वंचित किया गया है। इज़राइल इस इनकार को लागू करता रहता है, भले ही वह अपनी **वापसी के कानून** के तहत दुनिया भर के यहूदियों को स्वचालित नागरिकता देता है - चाहे वे या उनके पूर्वज कभी फिलिस्तीन में रहे हों या नहीं।

कब्जे वाले वेस्ट बैंक में, विस्थापन की प्रक्रिया सक्रिय और तेज हो रही है। सशस्त्र इज़राइली बस्तीवासी नियमित रूप से फिलिस्तीनी गांवों पर **पोग्रोम-शैली के हमले** करते हैं, फसलों को नष्ट करते हैं, सड़कों को अवरुद्ध करते हैं, घरों को जलाते हैं, और परिवारों पर हमला करते हैं - अक्सर इज़राइली सेना की सुरक्षा या उदासीनता के तहत। ये हमले अलग-थलग या स्वतंत्र कार्रवाइयाँ नहीं हैं; ये जमीन से फिलिस्तीनी उपस्थिति को मिटाने के उद्देश्य से एक व्यापक, राज्य समर्थित **उत्तरोत्तर जातीय सफाई** रणनीति का हिस्सा हैं।

2024 में, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने एक ऐतिहासिक राय जारी की, जिसमें कहा गया कि:

- **वेस्ट बैंक में सभी इज़राइली बस्तियाँ अवैध हैं,**
- **इज़राइल को इन्हें खाली करना और ध्वस्त करना होगा,**
- **और नष्ट की गई संपत्ति और चुराई गई जमीन के लिए फिलिस्तीनियों को मुआवजा देना होगा।**

इज़राइल ने इस फैसले को **नजरअंदाज** किया और इसके बजाय बस्ती निर्माण को तेज कर दिया। संयुक्त राज्य अमेरिका - अंतरराष्ट्रीय कानून के प्रति अपनी कथित प्रतिबद्धता के बावजूद - ने **बिना शर्त सैन्य और राजनीतिक समर्थन** देना जारी रखा, जिससे इज़राइल को सार्थक परिणामों से बचाया गया।

आत्मरक्षा पर अमेरिका का दोहरा मापदंड

इस पाखंड का सबसे स्पष्ट प्रदर्शन अमेरिका की घरेलू नीति और उसकी विदेश नीति की तुलना में होता है।

पूरे अमेरिका में, **Stand Your Ground कानून** नागरिकों को अपने या अपनी संपत्ति की रक्षा के लिए घातक बल का उपयोग करने की अनुमति देते हैं। कई राज्यों में **पीछे हटने की कोई जिम्मेदारी** नहीं है, और अदालतें अक्सर संदिग्ध मामलों

में भी आत्मरक्षा के कथन का समर्थन करती हैं। अमेरिकी संस्कृति इस सिद्धांत को स्वतंत्रता के मूलभूत आधार के रूप में उत्सव मनाती है - अपने घर, परिवार और जमीन को किसी भी घुसपैठिए से बचाने का अधिकार।

लेकिन जब फिलिस्तीनी ठीक यही करने की कोशिश करते हैं - जब वे सशस्त्र बस्तीवासियों, कब्जे वाली सेनाओं, घरों की तोड़फोड़ और जमीन की चोरी के खिलाफ **अपने स्थान पर डटे रहते हैं** - तो उनका बचाव नहीं किया जाता। उन्हें **राक्षस बनाया जाता है**। उन्हें आतंकवादी कहा जाता है, ड्रोन द्वारा निशाना बनाया जाता है, प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है, बिना मुकदमे के कैद किया जाता है, और मार दिया जाता है।

जब निम्नलिखित होता है तो यह अमेरिकी मूल्यों के बारे में क्या कहता है:

- टेक्सास में एक घर का मालिक एक निहत्थे घुसपैठिए को मारने के लिए प्रशंसा पाता है,
- लेकिन एक फिलिस्तीनी किसान जो अपने जैतून के बाग को बस्तीवासियों से बचाने की कोशिश करता है, उसे उग्रवादी कहा जाता है और गिरफ्तार कर लिया जाता है?

यह तर्क की विफलता नहीं है; यह **राजनीतिक सुविधा** का परिणाम है। अमेरिका आत्मरक्षा के अधिकार का सार्वभौमिक रूप से बचाव नहीं करता - यह उस अधिकार का बचाव तब करता है **जब यह उसके रणनीतिक हितों के अनुरूप होता है**, और इसे तब अस्वीकार करता है जब यह उन हितों को खतरे में डालता है।

यह चयनात्मक नैतिकता इज़राइल को दशकों से चल रही एक संपत्ति छीनने की मुहिम को जारी रखने की अनुमति देती है, जबकि वह खुद को पीड़ित के रूप में प्रस्तुत करता है - और फिलिस्तीनियों को बिना राज्य, बिना आवाज़ और प्रतिरोध के लिए अपराधी बनाया जाता है।

निष्कर्ष: अमेरिकी मूल्यों का दर्पण

संयुक्त राज्य अमेरिका तब तक न्याय, कानून और आत्मरक्षा का दावा नहीं कर सकता, जब तक कि वह **एक रंगभेदी शासन को वित्त पोषण, हथियार और बचाव** करता रहे, जो खुले तौर पर अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करता है और स्वदेशी आबादी को हिंसक रूप से दबाता है।

यदि **आत्मरक्षा** एक अधिकार है, तो इसे सभी लोगों के लिए मान्यता दी जानी चाहिए - **न केवल फ्लोरिडा के बस्तीवासियों के लिए, बल्कि हेब्रोन के चरवाहों के लिए भी**; न केवल उपनगरीय घर मालिकों के लिए, बल्कि गाजा में घेराबंदी में रहने वाले शरणार्थियों के लिए भी।

जब तक अमेरिका अपनी विदेश नीति को उन सिद्धांतों के अनुरूप नहीं करता, जिन्हें वह घरेलू स्तर पर लागू करने का दावा करता है, तब तक वह उस अन्याय में सहभागी बना रहेगा, जिससे वह घृणा करने का दावा करता है।

नकबा जारी है। और अपने स्थान पर डटे रहने की लड़ाई भी।